www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-3* *October 2024***

कृषि विकास की समस्याएँः जनपद देवरिया (उ.प्र.) का एक भौगोलिक अध्ययन

मृदुला वर्मा

शोध छात्रा, भूगोल विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ0 दुर्गावती यादव

सहायक आचार्य, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

अध्ययन क्षेत्र जनपद देवरिया में भूमि ही सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, जिसका दोहन विभिन्न सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं में हजारों वर्षों से किया जाता रहा है। यहाँ सम्पूर्ण आर्थिक तंत्र के केन्द्र में भूमि आधारित कृषि है, जिससे किसान इस प्रकार आबद्ध है कि उससे हटकर उसका कल्याण सम्भव नहीं है। फलस्वरूप समुचित कृषि सुधार के द्वारा ही ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की जा सकती हैं, जिससे क्षेत्र का विपन्न किसान अपनी आर्थिक एवं सामाजिक दशा में सुधार कर सकता है। इस नगर का नामकरण 'देवरण्य' शब्द से हुई है, जो देवरहा बाबा की जन्मस्थली है। इस क्षेत्र में ऐसी भू वैन्यासिक संगठन और समन्वित विकास योजना की आवश्यकता है, जिससे क्षेत्र में रोजगार प्राप्ति की सुविधा और आय में वृद्धि की सम्भावना हो। इसके लिए जहाँ एक ओर प्राकृतिक विपदाओं पर नियंत्रण आवश्यक है, तो दूसरी ओर कृषि अर्थव्यवस्था में नवीन तकनीकों एवं वैज्ञानिक प्राविधियों के प्रयोग से उत्पादन में अभिवृद्धि, कृषि का व्यापक व्यापारीकरण तथा उसमें विविधता उत्पन्न करने की आवश्यकता है, जिससे क्षेत्र के निवासियों को स्वास्थ्यप्रद भोज्य पदार्थ एवं जीवन की अन्य सुविधायें प्रदान की जा सके। इससे जहाँ एक ओर भूमि के दुरूपयोग में कमी होगी, तो दूसरी ओर उसमें क्षेत्र की बढ़ती जनसंख्या के अधिभार को सहन करने की क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे जनपद आत्मनिर्भर होकर कालान्तर में अन्य क्षेत्रों को अपने उत्पादनों का लाभ दे सकेगा।

कूट शब्द– कृषि, प्राकृतिक संसाधन, फसल संयोजन, भूमि।

प्रस्तावना

देवरिया जनपद भारत के उत्तर प्रदेश प्रान्त में स्थित एक प्रमुख शहर है। देवरिया नगर, दक्षिण–पूर्व उत्तर प्रदेश राज्य, के सरयू (घाघरा) नदी के तट पर स्थित है। यह सरयू (घाघरा) नदी के उत्तर–पूर्व क्षेत्र में स्थित है। यह 26006′ से 26045′ उत्तरी (अक्षांश) और 83029′ से 84011′ पूर्वी (देशांतर) रेखा के मध्य फैला हुआ है। जो 2538 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है। यह समुद्र तल से 76.14 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और उपजाऊ कृषि भूमि से घिरा है, इसके पश्चिमोत्तर और पूर्वोत्तर भाग में औसत से अधिक ऊँचाई वाले ऊबड़–खाबड़ मैदान तथा दक्षिण–पश्चिम में सरयू नदी के तटवर्ती भाग में ढलान है। सरयू नदी के उत्तर और पूर्वी हिस्से में गेहुं के उपजाऊ मैदान हैं। सरयूपार का मैदान गेहूँ, चावल और गन्ना की खेती का समृद्ध इलाका है और इस समूचे क्षेत्र का सबसे संपन्न और सर्वाधिक आबादी वाला हिस्सा है। राप्ती, छोटी गंडक, कुर्ना, गोर्र, बथुआ, और नकटा नदियाँ इस क्षेत्र को अपवाहित करती हैं। यहाँ की मिट्टी बलुई और बलुई दोमट है। अपेक्षाकृत सामान्य बारिश एवंबाढ़ग्रस्तहोनेके बावजूद यहाँ का मौसम विशेष रूप से स्वास्थ्य वर्द्धक और खुशनुमा है लेकिन बारिश के मौसम

में कुछ बीमारियाँ होती है। यहाँ के किसान मक्के की अनेक किस्मों का उत्पादन करते है साथ ही प्रति हेक्टैयर उत्पादन अधिक होने के कारण यहाँ उत्तरी भाग में किसान मक्के की खेती करते है। जिले का ज्यादा औद्योगीकरण नहीं हो पाया है, जिसकी वजह से यहाँ की लगभग 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है।

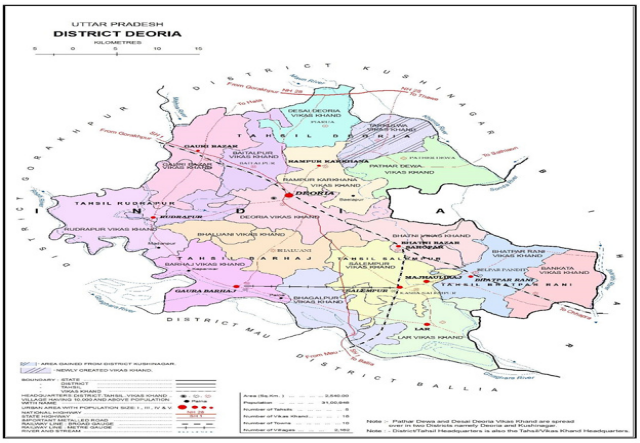

देवरिया को 16 विकास खण्ड (गौरीबाजार, बैतालपुर, देसई देवरिया, पथरदेवा, रामपुर कारखाना, देवरिया सदर, रुद्रपुर, भलुअनी, बरहज, भटनी, भाटपाररानी, बनकटा, सलेमपुर, भागलपुर, लार और तरकुलवा) में विभाजित किया गया है। 05 तहसील (देवरिया, रुद्रपुर, बरहज, सलेमपुर, और भाटपार रानी)। बलुई दोमट मिट्टी यहाँ लगभग सभी विकास खण्ड क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

शोध की प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोत से प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग एवं सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए क्षेत्र में भौतिक तथा सांस्कृतिक मानचित्र का प्रयोग यथा स्थान पर किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पर आधारित है।

जनपद देवरिया में शोध का उद्देश्य

- जिले की भौगोलिक स्थिति के अनुसार कृषि विकास की समस्या का पता लगाना।
- अलग–अलग विकासखण्ड में फसल विविधीकरण को पहचानना।
- प्राकृतिक खेती, और मिश्रित खेती का अवलोकन कर किसानों को आवश्यक जानकारी देना।
- मिट्टी की गुणवत्ता का परीक्षण कर फसल गहनता का पता लगाना।

जनपद देवरिया में ड्डषि विकास की समस्याएँ

छोटी और बिखरी हुई भूमि–

आज कृषि की सबसे बड़ी समस्या यही है किसानों के सबसे बड़े हिस्से के पास सबसे कम जमीन है। देवरिया में लघु एवं सीमांत किसान 86 प्रतिशत है लेकिन उनके अधिकार में 50 प्रतिशत से भी कम भूमि है। भूमि के असमान वितरण और छोटे किसानों की अधिक संख्या एक ऐसी समस्या है जिसका जवाब ढूंढना बहुत कठिन है।

सिंचाई के लिए पानी की कमी–

भारत में जिस तरह की फसलें बोई जाती है उनके के लिए पानी बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन खरीफ फसलों में अनियमित बारिश की समस्या हो अथवा रबी फसलों के लिए पानी की कमी की समस्या हो किसानों को हर वक्त पानी परेशान करता रहता है। आज के दौर में जहां जलवायु परिवर्तन का खतरा मंडरा रहा है, भू जल स्तर लगातार गिरता जा रहा है ये समस्या भयानक होने की तरफ बढ़ रही है। जनपद के दक्षिण और पश्चिम भाग में सरयू नदी के वेसिन में खरीफ की फसल बाढ़ से प्रभावित होती है। यहाँ वर्षा काल में फसल बाढ़ में डूब कर नष्ट हो जाती है जबकि जनपद के उत्तर, मध्य एवं पूर्व भाग में कभी – कभी वर्षाकाल में एवं प्रायः रबी की

फसल में सूखे से प्रभावित होती है जिसे सिंचाई की आवश्यकता होती है।

भूमि उपयोग में असमानताः

जनपद के भूमि उपयोग में व्यापक असमानता पाई जाती है यहाँ षुद्ध कृशित भूमि सर्वाधिक 79.48 प्रतिषत है जबकि चारागाह के अंतर्गत 0.04 प्रतिषत भूमि पायी गई है।

सारणी –1 जनपद देवरियाः भूमि उपयोग में असमानता

क्रमांक	भूमि उपयोग	वर्ष 2023-24 (क्षेत्रफल हे0 में)	वर्ष 2023-24 (प्रतिशत में)
1.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	249376	100
2.	वन क्षेत्र	261	0.10
3.	कृषि बेकार भूमि	1846	0.74
4.	वर्तमान परती भूमि	9501	3.81
5.	अन्य परती भूमि	2307	0.93
6.	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	1764	0.71
7.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	32372	12.98
8.	चारागाह	87	0.04
9.	उद्यान एवं बाग	3064	1.23
10.	शुद्ध कृषित भूमि	198174	79.48

स्रोतः जिला सांख्यिकी पत्रिका, देवरिया (2023–24)

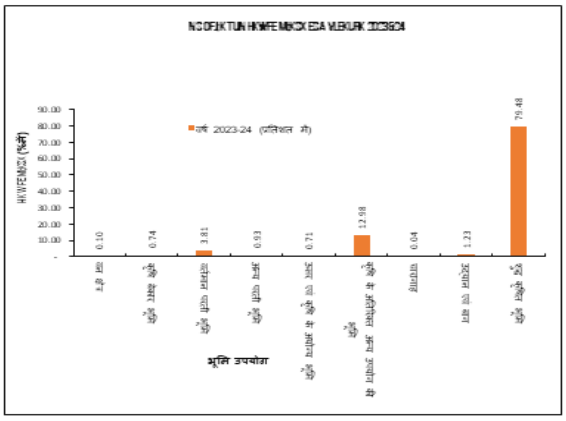

कृषि के प्रति नई पीढ़ी में रुचि का अभाव–

किसानों पर किए कई सर्वे में यह सामने आया है कि 50 प्रतिशत किसान अपने बच्चों को किसानी नहीं करवाना चाहते, साथ ही नई पीढ़ी भी किसानी नहीं करना चाहती। कृषि कार्य में अधिक लागत एवं श्रम लगने के कारण किसान खेती छोड़ कर मजदूरी , व्यवसाय एवं नौकरी करना पसंद कर रहे हैं। हालांकि आज भी कृषि से देश का 49 प्रतिशत रोजगार उपलब्ध होता है पर आने वाले समय में यह बड़ी समस्या हो सकती है।

मृदा अपरदन–

अध्ययन क्षेत्र में दक्षिणी और पश्चिमी भाग में सरयू नदी वेसिन में भारी अपरदन और जमाव होता रहता है जो रबी की फसलों के लिए लाभदायक तो खरीफ की फसलों के लिए नुकसानदायक है । चूंकि सरयू नदी के प्रभाव क्षेत्र में प्रायः रबी की फसलों का अच्छा उत्पादन होता है जबकि खरीफ की फसलें अधिक जल जमाव के कारण नष्ट हो जाती हैं । अतः बाढ़ प्रवण क्षेत्र में उचित नियोजन अपनाया जाना आवश्यक है।

सरकारी योजनाओं का असफल क्रियान्वयन–

सरकारें कई योजनाएं बनाती हैं पर उनका पूरा लाभ किसानों तक नहीं पहुंच पाता। पहले तो किसानों में योजनाओं के प्रति जागरूकता की कमी है अगर जागरूकता हो भी तो सरकारी अफसरों के भ्रष्टाचार और कागजी झंझटो का सामना करना गंभीर समस्या है। किसानों को खेती करने के लिए पूँजी की अवश्यकता होती है , जिसके लिए किसान क्रेडिट कार्ड एक प्रभावी योजना है जो कम व्याज दर पर ऋढ़ उपलब्ध करवाती है किन्तु उसे पाने के लिए किसान को विभिन्न कागजी कार्यवाही पूरी करनी पड़ती है। इस प्रकार की योजनाओं को और अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जिससे अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सके।

किसानों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिलना–

किसानों की सबसे बड़ी समस्या उनके कृषि उत्पादों की कम कीमत है। बिचौलियों द्वारा किसान के उत्पाद

का अधिकतम लाभ कमाया जाता है जबकि किसान द्वारा कभी –कभी उत्पादन के लिए लगाई गई अपनी लागत पूँजी भी नहीं मिल पाती है। हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि उत्पादन की ऊर्जा पर आधारित उचित मूल्य निर्धारण और कृषि मजदूरी को औद्योगिक मजदूरी के बराबर करना किसानों के लिए फायदेमंद हो सकता है।

कृषि क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी–

किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक बुनियादी ढांचे की कमी है। इसमें खराब सड़कें, परिवहन सुविधाएं आदि शामिल हैं। अध्ययन क्षेत्र में कृषि क्षेत्रों में कच्ची सड़कों का निर्माण किया गया है जो बरसात के समय टूट–फूट अथवा बह जाती हैं जिससे प्रत्येक वर्ष राजस्व की हानि होती है। किसानों को परिवहन सेवाओं के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है जिससे उनकी लागत काफी बढ़ जाती है।

ड्डषि विपणन की समस्या–

अध्ययन क्षेत्र में कृषि विपणन की समस्याओं में बहुत अधिक मध्यवर्ती, दोषपूर्ण वजन और पैमाने, निरक्षरता और एकता की कमी, भंडारण की कमी, परिवहन सुविधाओं की कमी, वित्तीय संसाधनों की कमी, संगठित विपणन प्रणाली की कमी, मानकीकरण की कमी, बाजार के बारे में जागरूकता की कमी आदि शामिल है।

जनपद देवरिया में ड्डषि विकास हेतु समाधान

- किसान एक साथ मिलकर सामूहिक रूप से बड़ी भूमि पर वैज्ञानिक तरह से खेती करें।
- ऐसे बीजों का उपयोग, जिनमें पानी की कम जरूरत पड़े, सिंचाई के उन्नत तकनीक और जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बनी रहे।
- कृषि का मशीनीकरण।
- पढ़ी–लिखी नई पीढ़ी की जैविक खेती में रुचि और उनके वैज्ञानिक तरह से कृषि का लाभ उठाने वाले मानसिक दृष्टिकोण।
- पेड़ों को लगाना भी एक अच्छा समाधान है।
- जैसे–जैसे किसान शिक्षित होते जाएंगे और सरकारी संस्थाओं का डिजिटलाइजेशन होगा, कृषि की समस्या का समाधान भी हो जाएगा।

निष्कर्ष

निम्न शोध से पता चला कि देवरिया जनपद में औद्योगिक विकास के लिए कृषि का बहुत अधिक महत्व है, यहाँ कृषि आधारित उद्योगों की प्रधानता है, क्योंकि यहाँ उद्योगों को कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है। इन उद्योगों में बेकरी, चीनी, वनस्पति घी, बागवानी, पशुपालन, कुक्कुट पालन तथा मत्स्यन उद्योग प्रमुख है। यहाँ कृषि आधारित उद्योग की अपार सम्भावना है चूंकि यहाँ रबी, खरीफ एवं जायद तीनों फसलों का उत्पादन किया जाता है। यहाँ स्थापित उद्योगों के लिए बड़े बाजार की संभावनाएं विद्यमान हैं क्योंकि पूरब में उद्योगों से विहीन बिहार राज्य , उत्तर में गोरखपुर महानगर के साथ–साथ स्वयं देवरिया नगर स्थित है। औद्योगिक क्षेत्र में लगे हुए लोगों को खाद्यान्न भी कृषि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. कुमार, सुशील, ग्रामीण विकास एवं क्षेत्रीय नियोजन, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

2. तिवारी, आर.सी. और सिंह, बी.एन., कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज, पेज नं. 2014. प्र.सं. 80–95.
3. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी.एन. कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज. 2018 प्र.सं. 60–82.
4. माथुर, बी.एल. ग्रामीण अर्थव्यवस्था, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली. 2017.प्र.सं. 205–213.
5. मौर्य, एस.डी. मानव एवं आर्थिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज. 2012.प्र.सं. 256–280.
6. सिंह, बैजनाथ. सामुदायिक ग्रामीण विकास, अर्जुन पब्लिशिंग नई दिल्ली. 2011. प्र.सं. 89–103
7. डॉ. प्रमिला कुमार, डॉ. श्रीकमल शर्मा, मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन',मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2010।
8. डॉ. अल्का गौतम. भारत का वृह्द भूगोल शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद. 2009।
9. डॉ. अल्का गौतम, संसाधन एवं पर्यावरण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद. 2007।
10. कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, कृषि विकास की समस्याएँ एवं संभावनाएँ. नई दिल्ली कृषि मंत्रालय, 2024.
11. श्रीवास्तव ए, तिवारी एस, कृषि विकास की समस्याएँ एवं संभावनाएँ, नई दिल्ली आईएसबीएन पब्लिशर्स, 2018 प्र.सं. 234.
12. कुमार एस, श्रीवास्तव ए, कृषि विकास की संभावनाएँ नई दिल्ली आईएसबीएन पब्लिशर्स. 2017. प्र.सं. 189.
13. श्रीवास्तव ए, कुमार एस, कृषि विकास की समस्यायें एवं संभावनाएँ, नई दिल्ली आईएसबीएन पब्लिशर्स. 2014 प्र.सं. 230.
14. कुमार पी, श्रीवास्तव ए, कृषि विकास की संभावनाएँ, नई दिल्ली आईएसबीएन पब्लिशर्स. 2013 प्र.सं. 205

Cite this Article-

'मृदुला वर्मा', डॉ0 दुर्गावती यादव', "कृषि विकास की समस्याएँः जनपद देवरिया (उ.प्र.) का एक भौगोलिक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:10, October 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i3007
Published Date- 07 October 2024